International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-11-2025, Accepted: 10-12-2025, Published: 25-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 158-161

रामचरितमानस में निहित जीवन–मूल्य और उनकी समकालीन प्रासंगिकता

सचिन गौतम[1], डॉ. शर्मिला[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत

सारांश
गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय समाज, संस्कृति और आस्था का एक अमूल्य ग्रंथ है। यह न केवल भक्ति का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक और पारिवारिक मूल्यों का एक जीवंत दस्तावेज भी है। तुलसीदास ने अपने समय की सामाजिक और धार्मिक विसंगतियों को समझते हुए इस ग्रंथ के माध्यम से लोकमंगल की भावना को केंद्र में रखा। वर्तमान समय में जब समाज अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे नैतिक पतन, पारिवारिक विघटन, सामाजिक असहिष्णुता, और राजनीतिक भ्रष्टाचार से जूझ रहा है, रामचरितमानस अधिक प्रासंगिक हो उठता है।
रामचरितमानस में राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे एक आदर्श पुत्र हैं जो पिता के वचन के लिए वनवास स्वीकार करते हैं, एकपत्नीव्रती पति हैं, आदर्श मित्र हैं और प्रजा के कल्याण हेतु समर्पित राजा भी हैं। राम के जीवन से यह शिक्षा मिलती है कि मर्यादा और धर्म का पालन ही व्यक्ति को श्रेष्ठ बनाता है। तुलसीदास ने धर्म को जीवन के हर क्षेत्र से जोड़ा है– कृमित्रता, पुत्र धर्म, भ्रातृ धर्म, राज धर्म, दाम्पत्य धर्म आदि।
तुलसी ने राम और सीता के माध्यम से पति–पत्नी संबंधों की मर्यादा और प्रेम को दर्शाया है। वे नारी के पतिव्रत धर्म के साथ–साथ पुरुष के पत्नीव्रत धर्म की भी बात करते हैं। राम का एकपत्नी व्रत और सीता का समर्पण भाव आज के समय में पारिवारिक मूल्यों के क्षरण को रोकने में मार्गदर्शक हो सकता है। रामराज्य की कल्पना तुलसीदास का एक महान सामाजिक–राजनीतिक योगदान है। रामराज्य में प्रजा सुखी है, धर्म की स्थापना है, दैहिक–दैविक–भौतिक तापों से मुक्ति है और सब एक–दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखते हैं। यह आदर्श शासन व्यवस्था आज के लोकतंत्र के लिए प्रेरणा है। तुलसीदास ने उस समय की अराजक शासन व्यवस्था की आलोचना करते हुए रामराज्य के रूप में एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत किया।
तुलसीदास की एक अन्य विशेषता उनका समन्वयवादी दृष्टिकोण है। उन्होंने शैव और वैष्णव संप्रदायों के बीच एकता स्थापित करने का प्रयास किया। रामचरितमानस में शिव और राम के आपसी सम्मान का वर्णन करके उन्होंने धार्मिक सद्भाव का संदेश दिया। यह समन्वय चेतना आज के धार्मिक विभाजन के समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है। रामचरितमानस में निहित मूल्य जैसे– परोपकार, सहिष्णुता, कर्तव्यपरायणता, सत्य, प्रेम और समर्पण आज के समय में खोते जा रहे हैं। इस ग्रंथ के माध्यम से तुलसीदास ने एक ऐसे समाज की कल्पना की है जहाँ सबके कल्याण की भावना हो और जहाँ व्यक्ति स्वयं के साथ–साथ समाज के हित को भी महत्व दे।
रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवनशास्त्र है। आज जब समाज अनेक स्तरों पर विघटन और भ्रम का शिकार है, तब यह ग्रंथ हमें संयम, नैतिकता, और समरसता की प्रेरणा देकर एक आदर्श समाज के निर्माण की दिशा दिखाता है। इसकी प्रासंगिकता आज के समय में पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है।

मूल शब्दः गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, भारतीय समाज, संस्कृति और आस्था, भक्ति, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य

प्रस्तावना
साहित्य समाज का दर्पण भी होता है और दीपक भी। दर्पण इसलिए कि वह समाज की विसंगतियों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करके हमें नींद से जगाता है और दीपक इसलिए कि उन समस्याओं या विसंगतियों के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त करता है। साहित्य की इसी विशेषता के कारण उसका संबंध लोकमंगल की साधनावस्था से जुड़ता है। हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक रामभक्ति काव्य की एक लंबी परम्परा रही है। भक्तिकाल में रामभक्ति काव्य को इस परम्परा का चरमोत्कर्ष कहा जा सकता है। इसी काल में प्रसिद्ध रामभक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हुए। उनके द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' अपने पूर्ववर्ती व परवर्ती काव्यों से सर्वश्रेष्ठ रामकाव्य है। तुलसीदास कृत रामचरितमानस नैतिक व मानवीय मूल्यों को सूक्ष्मता से धारण किए हुए है। तुसलीदास का काव्य लोकमंगल का काव्य है और रामचरितमानस लोकमंगल की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ काव्य है। तुलसीदास ने स्वयं माना है कि कविता या साहित्य वही श्रेष्ठ है जो गंगा के समान सर्वजन का कल्याण करने वाला हो –

"कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।"[1]

तुलसीदास ने मानस के माध्यम से भारतीय जनमानस में जहाँ भक्ति की पावन धारा प्रवाहित की वहीं मानस के विभिन्न पात्रों के माध्यम से उदात्त पारिवारिक जीवन मूल्यों व आदर्शों को स्थापित किया। राम के चरित्र के माध्यम से इन्होंनें सबसे अधिक बल मर्यादा पर दिया। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे एक आदर्श शिष्य हैं जो अपने गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं। वे एक आदर्श पुत्र हैं जो पिता के वचन को निभाने के लिए चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करते हैं। वे एकपत्नीव्रत धारी हैं, वे आदर्श मित्र हैं, आदर्श राजा हैं। प्रजा के कल्याण के लिए वे अपने जीवन के व्यक्तिगत सुखों का त्याग कर देते हैं। राम के चरित्र के माध्यम से तुलसीदास संदेश देते हैं कि मर्यादा ही व्यक्ति का सच्चा आभूषण है। मर्यादविहीन जीवन मनुष्य के लिए निरर्थक है। मानस में वे लिखते हैं –

''नीति प्रीति यश–अयश गति, सब कहँ शुभ पहचान,
बस्ती हस्ती हस्तिनी देत न पति रति दान।''[2]

अर्थात् जहाँ हाथिनी भी हाथी को गाँव से बाहर जाकर रति दान करती है, वहाँ मनुष्य को तो मर्यादा व संयम में रहना ही चाहिए। तुलसीदास ने मानस में स्थान–स्थान पर इस बात का उल्लेख

किया है कि मनुष्य के जीवन में धर्म अत्यंत आवश्यक है। वे धर्म को एक जीवन मूल्य मानते हैं जिसको धारण किए बिना मनुष्य के आपसी संबंध, व्यवहार, भाव या मर्यादा आदि कुछ भी निर्मित नहीं हो सकते। मित्रता में धर्म का महत्व समझते हुए वे कहते हैं कि मित्रता तभी निभाई जा सकती है जब मित्रता के मूल्य अर्थात् धर्म को निभाया जाए–

"जे न मित्र दुःख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।
निज दुः ख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुःख रज मेरु समाना।।"[3]

दुख या विपत्ति के कठिन समय में भी जो व्यक्ति मित्रता के धर्म का निर्वहन करे, वही सच्चा मित्र है। राम और सुग्रीव तथा हनुमान, विभीषण, अंगद आदि की मित्रता के माध्यम से उन्होंनें इस बात को पुष्ट किया है। इसी प्रकार पुत्र धर्म के निर्वाह का जैसा चित्रण मानस में है वैसा कहीं अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। तुलसी के अनुसार पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है और यह धर्म सभी धर्मों से उच्च है–

"जो पितु मातु कहेउ बन जाना, तो कानन सत अवध समाना।"[4]

भारत लक्ष्मण और शत्रुघ्न के माध्यम से उन्होंनें भ्रातृधर्म की व्याख्या की है। रामचरितमानस में प्रत्येक स्थान पर मानवीय मूल्यों की व्याख्या धर्म के रूप में है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि तत्कालीन समय में भारतीय जानता का एक बड़ा वर्ग धर्म के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। अतः धर्म के माध्यम से और धार्मिक चरित्रों के माध्यम से सर्वसाधारण में मानवीय और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना सरल कार्य था। तुलसी ने आम जनमानस की भाषा का प्रयोग करते हुए इस कार्य में जो सफलता हासिल की, वह बाद में किसी को नहीं मिल पाई। तुलसी द्वारा स्थापित ये जीवन मूल्य तत्कालीन समय में जितने महत्वूर्ण रहे, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण वर्तमान समय में हो गए हैं। वर्तमान में दिन प्रतिदिन टूट रहे संयुक्त परिवार, स्त्री–पुरुष संबंध, गुरु–शिष्य संबंध इस बात का प्रमाण हैं। ये सब समस्याएँ इसलिए आ रही हैं क्योंकि मनुष्य अपने जीवन में धर्म व नैतिक मूल्यों को धारण नहीं कर पा रहा है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम के स्थितप्रज्ञ रूप का चित्रण किया है। स्थितप्रज्ञ वह है जिसके लिए सुख और दुःख समान अवस्था हों। हालाँकि सुख–दुःख जीवन का यथार्थ हैं। दुखों से मुक्ति संभव नहीं है। संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसे दुखों का सामना न करना पड़ता हो। साधारण व्यक्ति जीवन में क्षणिक सुखों के आगमन से बहुत अधिक खुश व उत्साहित हो जाते हैं तथा जीवन के कठिन समय में बहुत अधिक निराश व हतोत्साहित हो जाते हैं। राम के जीवन में भी सुख–दुःख निरंतर आते–जाते रहते हैं। न तो वे कभी सुख में बहुत अधिक प्रसन्न हुए न कभी दुख में घबराए। वह दोनों ही स्थितियों में सम्यक् बने रहे। इसीलिए उन्हें स्थितप्रज्ञ कहा गया। ज्ञानी व्यक्ति का जीवन ऐसा ही होता है। उसका जीवन सदैव पर हित के लिए समर्पित होता है। तुलसीदास कहते हैं –

"परहित लागि तजई जो देहि, संतत संत प्रसंसहि तेहि।"[5]

वर्तमान समय में जब आधुनिकीकरण की दौड़ में मनुष्य विज्ञान एवं तकनीक के विकास के करण धैर्यशून्य हो गया है। आधुनिकता के संसाधनों ने उसके जीवन को इतना आरामदायक बना दिया है कि वह एक क्षण का भी दुख सहन करने में सक्षम नहीं है। साथ ही जीवन में थोड़ा सा दुख आते ही वह स्वयं को सृष्टि का नियामक समझने लगता है। परिणामतः दुख की अवस्था आने पर मनुष्य अवसादग्रस्त हो जाता है। राम का जीवन मनुष्य के लिए संदेश है कि अगर वह समयक् जीवन जिए तो उसके लिए सांसारिक विषय विकारों से मुक्ति सरल हो जाती है। तुलसी ने मानस में राम–सीता व अन्य पात्रों के माध्यम से पति–पत्नी संबंधों के आदर्श रूप को भी स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने राम–सीता के साथ–साथ शिव–पार्वती, राजा दशरथ और उनकी रानियाँ, रावण–मंदोदरी तथा मनु–सतरूपा आदि के माध्यम से पति व पत्नी के कर्तव्यों का वर्णन किया है। तुलसीदास की विशेषता यह है कि उन्होंनें मानस में न सिर्फ स्त्री के पतिव्रत धर्म की बात की है बल्कि पुरुष के पत्नीव्रत धर्म की भी बात की है। सीता से विवाह होने पर राम एक प्रण लेते हैं कि वे एकपत्नीव्रत धर्म का पालन करेंगे। उन्होंनें बाकी राजाओं की तरह कई–कई विवाह नहीं किए। तुलसीदास लिखते हैं कि एक लड़की को माता–पिता, भाई–बहन तथा सगे–संबंधी एक सीमा तक ही सुख प्रदान कर सकते हैं। विवाह के पश्चात उसके सारे सुख–दुख पति के साथ जुड़ जाते हैं। अतः पत्नी को पति की सच्चे मन से सेवा करनी चाहिए तथा एक पति को भी अपनी पत्नी का ध्यान ऐसे ही रखना चाहिए जैसे उसके माता–पिता और भाई–बहन रखते थे। तुसलीदास लिखते हैं –

"मात पितु भ्राता हितकारी, मितप्रद सब सुनु राजकुमारी।
अमित दानि भर्ता बयदेही, अधम सो नारि जो सेव न तेहि।।"[6]

सीता और अनुसुईया के वार्तालाप के माध्यम से तुलसीदास कहते हैं कि इस संसार में वही नारी श्रेष्ठ है जो अपने पति के चरणों में तन, मन और वचन से स्वयं को समर्पित कर देती है। इसी प्रकार का आचरण एक पति का भी अपनी पत्नी के लिए होना चाहिए–

"एकई धर्म एक व्रत नेमा।
कायँ बचन मन पति पद प्रेमा।।"[7]

जब राम को चौदह वर्ष का वनवास होता है और वह वन में जाते हैं तब सीता उन्हें कहती है कि हे प्राणनाथ! यहाँ अयोध्या के राजमहल में मुझे भले ही सभी प्रकार के सुख और आनंद मिलें, आपके बिना वे सभी सुख और आनंद मेरे लिए दुख के समान हैं। अर्थात् राम के बिना स्वर्ग भी सीता के लिए नर्क के समान है। इस प्रकार तुलसी यह संदेश देना चाहते हैं कि सुख और दुख प्रत्येक परिस्थिति में पति–पत्नी को एक दूसरे का सहारा बनना चाहिए। इस संबंध में वे लिखते हैं –

"प्राणनाथ करुणायतन सुंदर सुखद सुजान।
तुम बिनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान।।"[8]

इसी प्रकार रावण–मंदोदरी संवाद के माध्यम से उन्होंनें एक पत्नी के कर्तव्य का भी वर्णन किया है। तुलसी का मानना है कि एक पत्नी का धर्म है अपने पति को सद्मार्ग से भटकने से रोकना और उसे सत्य का मार्ग दिखाना। जब मंदोदरी को ज्ञात होता है कि राम सेना सहित समुद्र पार आ गए हैं तो वे अपने पति, पुत्रों व नगर की सुरक्षा से चिंतित होकर रावण को समझती हैं कि राम कोई साधारण पुरुष नही, स्वयं नारायण हैं। आप अपना विरोध त्यागकर उन्हें अपने हृदय में धारण पर लीजिए जिससे हमारा और समस्त नगरी का कल्याण हो सके। मंदोदरी कहती है–

"जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आएँ पुर कवन भलाई।
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी।।
रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी।
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरह।।"[9]

इस प्रकार रामचरितमानस में तुलसीदास ने दाम्पत्य जीवन के जिन आदर्शों को स्थापित किया था, वे तत्कालीन समय में तो महत्वूर्ण थे ही, साथ ही वर्तमान समय में टूटते स्त्री पुरुष संबंधों के दृष्टिकोण से और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

रामचरितमानस की रचना का मुख्य उद्देश्य लोकमंगल की कामना है। तुलसीदास मनुष्य के साथ–साथ प्रत्येक प्राणी के मंगल की कामना करते हैं। मानस में वे लिखते हैं–

"पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।
निर्नय सकल पुरान बेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर।।"[10]

अर्थात् प्राणिमात्र का कल्याण करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है और किसी को पीड़ा पहुँचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं है। यह बात समस्त वेद–पुराणों का निचोड़ है। वर्तमान समय में लोकतंत्र में हमें जो विचार दिखाई देते हैं लगभग वही विचार रामचरितमानस में रामराज्य के माध्यम से स्थापित करने का प्रयास किया गया है। रामराज्य का शासन लोक का शासन है जहाँ छल, कपट, दंभ, विद्वेष, अत्याचार व अनाचार का अंत व सर्वत्र शान्ति और समानता की स्थापना की बात की गई है –

''बैर न काहू सन कोई, राम राज्य विषमता खोई।''[11]

तुलसीदास ने रामराज्य के माध्यम से एक राजा के कर्तव्य का भी वर्णन किया है। उनके अनुसार एक राजा को अपनी प्रजा को अपनी संतान के समान मानकर उनका रक्षण करना चाहिए। जिस राजा के शासन में प्रजा दुखी हो वह राजा अवश्य ही नर्क का अधिकारी होता है–

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी।"[12]

मानस में हम राम के उस रूप को देखते हैं जो प्रजा के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। चौदह वर्ष के वनवास में उन्होंने सामान्य व्यक्ति के जीवन में आने वाले सभी दुखों व कष्टों का अनुभव किया था। इसीलिए राम जब जब राजा बने तो उन्होंने प्रजा के दुख दर्द को समझते हुए एक पिता के समान उनका संरक्षण किया।

तुलसीदास का समय राजनीतिक दृष्टि से अराजकता का समय था। इस्लामी शासक प्रजा पर भाँति–भाँति के अत्याचार कर रहे थे। प्रजा के सुख–दुख से दूर–दूर तक उनका कोई संबंध नहीं था। इसी को ध्यान में रखते हुए तुलसी ने तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए दुराचारी व अत्याचारी राजा की आलोचना की तथा राम के माध्यम से एक आदर्श राजा का चरित्र प्रस्तुत किया। रामराज्य की खुशहाली व समृद्धि के माध्यम से उन्होंनें एक ऐसे आदर्श राज्य की कल्पना की जहाँ सभी व्यक्ति तथा प्राणीमात्र सुख–शांति से अपना जीवन व्यतीत करें। किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार का कोई दैहिक, दैविक व भौतिक कष्ट न हो। तुलसी लिखते हैं –

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।
चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं।
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी।।"[13]

तुलसीदास के समय में जो समस्याएँ विद्यमान थी, लगभग वही समस्याएँ वर्तमान समय में भी विद्यमान हैं। वे तत्कालीन समय में व्याप्त गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं से चिंतित थे। इन सभी समस्याओं का समाधान उन्होंने रामराज्य के माध्यम से दिया है। रामराज्य में तुलसी ने जिन आदर्शों की कल्पना की है, वे आदर्श वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। तुलसीदास कृत रामचरितमानस की सर्वाधिक प्रासंगिकता इसमें निहित समन्वय चेतना के कारण है। इसी के आधार पर तुलसीदास समन्वय चेतना के महान कवि हैं। उन्होंनें धर्म, राजनीति, समाज, साहित्य, परिवार आदि सभी क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया और तत्कालीन समय में व्याप्त अधर्म, अनाचार, अशांति, वैमनस्य, पारस्परिक विद्वेष आदि को दूर करने का भी सफल प्रयास किया। रामराज्य में दुर्बल व शक्तिशाली दोनों आपस में मिल जुल कर प्रेम से रहते हैं। सभी व्यक्तियों की इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। प्रकृति भी प्रजा के कल्याण में सहायक है –

"फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन।
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई।।"[14]

रामचरितमानस में राम के माध्यम से उन्होंनें शैव– वैष्णव विवाद को भी सुलझाने का प्रयत्न किया है। राम कहते हैं –

"सिव द्रोही मम भगत कहावा। सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा।
संकर बिमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी।।"[15]

अर्थात् जो वैष्णव स्वयं को मेरा भगत कहता है और शिव का विरोधी है, वह मनुष्य मुझे स्वपन में भी प्रिय नहीं है। तुलसी के समय में हिंदू धर्म विभिन्न सम्प्रदायों में बँटा हुआ था। प्रत्येक संप्रदाय के लोग स्वयं को श्रेष्ठ व दूसरे संप्रदाय को निम्न दिखाने के प्रयास में रहते थे। तुलसीदास ने शिव व राम के चरित्रों द्वारा लोगों के इस भ्रम को तोड़ा की शिव व राम एक दूसरे के विरोधी हैं। ऐसी समस्या वर्तमान समय में भी विस्तृत रूप में व्याप्त है। विभिन्न धर्मों में आपसी विद्वेष तथा एक ही धर्म के विभिन्न संप्रदायों में आपसी विरोध सामान्यतः देखा जा सकता है। ऐसे समय में रामचरितमानस की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। मानस में व्याप्त तुलसी की इसी समन्वय चेतना के कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तुलसीदास को समन्वय का महान कवि और इनके काव्य को समन्वय की विराट चेष्टा कहा –

"लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके क्योंकि भारतीय जानता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार प्रचलित हैं। तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, ज्ञान और भक्ति का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वययय; रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय की विराट चेष्टा है।''[16]

वर्तमान समय में विचारधारात्मक अंतर्द्वंद्व, जटिलताएँ और मानव जीवन की विसंगतियां मनुष्य को निरंतर उद्वेलित कर रही हैं। भक्तिकाल में रामचरितमानस में राम का जो स्वरूप द्वंद्वातीत, शाश्वत मूल्य के प्रतिरूप तथा सच्चिदानंदन परब्रह्म के रूप में था वह स्वरूप वर्तमान जीवन की जटिलताओं व विसंगतियों के समक्ष एक समाधान के रूप में हमारे सामने आता है।

तुलसी ने रामचरितमानस के माध्यम से जिस विचार या सिद्धांत की स्थापना की वह समस्त मानव जाति के कल्याण से संबंधित है। वर्तमान समाज नैतिक अधोपतन व सामाजिक विषमता से पीड़ित होता जा रहा है। कवि को अपने समय की सामाजिक स्थिति के माध्यम से वर्तमान समाज की इन विसंगतियों का

पूर्वाभास हो गया था। वे रामचरितमानस में न केवल इन समस्याओं का चित्रण करते हैं बल्कि इनसे मुक्ति का मार्ग और निदान भी प्रस्तुत करते हैं। तुलसीदास द्वारा स्थापित राम का चरित्र बड़े ही सकारात्मक रूप में उभरकर हमारे सामने आता है। रामराज्य के माध्यम से उन्होंनें जिन सिद्धांतो व आदर्शों की स्थापना की है वह बाद के समय के लिए अनुकरणीय बन जाते हैं। महात्मा गांधी की अंतिम रूप से राज्य विहीन समाज की स्थापना तुलसीदास के इसी विचार से प्रेरित प्रतीत होती है।

तुलसी के राम का चरित्र जहाँ नवीन मर्यादा को स्थापित करता है, वहीं पारंपरिक व रूढ़िवादी मान्यताओं का खंडन भी करता है। राम उन सभी मान्यताओं का खंडन करते दिखाई देते हैं जो राजकुल में एक परम्परा के रूप में हमें दिखाई देती हैं। एकपत्नीव्रत धर्म का नियम लेकर वे राजपरिवारों में प्रचलित बहुपत्नी प्रथा का खंडन करते हैं। राम गुरुकुल में रहते हुए गुरु आज्ञा का पालन करते हुए कठिन श्रम करते हैं और आदर्श शिष्य का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार वे प्रजा में एक युवराज के रूप में इतने प्रिय थे कि राजगद्दी व शासन आसानी से उन्हें मिल जाता। वे चाहते तो यह कहकर वनवास जाने से मना भी कर सकते थे कि पिता के दिए वचन के लिए वे उत्तरदायी नहीं हैं। परन्तु फिर भी उन्होंने पिता के वचन का सम्मान रखा और चौदह वर्ष वनवास स्वीकार सकते हुए एक आदर्श पुत्र का उदाहरण प्रस्तुत किया।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वर्तमान समाज को रामचरितमानस के सभी सिद्धांत व आदर्शों को अपनाने की आवश्यकता है ताकि एक सभ्य समाज का निर्माण किया जा सके। रामचरितमानस सिर्फ एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है बल्कि मानव जीवन की एक सम्पूर्ण पाठशाला है। वर्तमान समय में जब समाज असहिष्णुता, हिंसा, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन आदि समस्याओं से जूझ रहा है, ऐसे समय में यह ग्रन्थ हमें सहिष्णुता, सच्चाई, प्रेम और कर्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। समन्वय की अवधारणा लिए हुए वार्मन समाज में और भविष्य में भी रामचरितमानस की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

संदर्भ

1. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या 35
2. आर्येन्दु अखिलेश, रामचरितमानस में मानव मूल्यों का चित्रण एवं स्थापना, जय विजय पत्रिका
3. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), किष्किंधा कांड, पृष्ठ संख्या 687
4. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार),अयोध्या कांड, पृष्ठ संख्या 390
5. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), बालकाण्ड, पृष्ठ संख्या 98
6. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), अरण्यक कांड, पृष्ठ संख्या 625
7. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), अरण्यक कांड, पृष्ठ संख्या 625
8. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), अयोध्या कांड, पृष्ठ संख्या 397
9. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), सुन्दर कांड, पृष्ठ संख्या 747
10. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), उत्तरकांड, पृष्ठ संख्या 948
11. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), उत्तरकांड , पृष्ठ संख्या 930
12. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), अयोध्या कांड, पृष्ठ संख्या 402
13. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), उत्तरकांड, पृष्ठ संख्या 930–931
14. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), उत्तरकांड, पृष्ठ संख्या 932
15. श्री रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर, टीकाकार (हनुमान प्रसाद पोद्दार), लंकाकांड, पृष्ठ संख्या 774
16. द्विवेदी हजारी प्रसाद, हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या 101